Postal Registration No. G/CHD/0107/2012-14 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 14 अंक 10 30 अक्तूबर, 2014 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

राष्ट्रीयता से रसातल की ओर अग्रसर राजनीति

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

राजनीति कभी श्रद्धा, सर्मपण, बलिदान था राजनेता के एक इशारे पर पर लाखों भारतवासी स्वतन्त्रता सग्रांम में कूद पड़े अपने प्राणों तक की आहूति देकर हमें आजादी दिला गए और कह गए थे- ''हम लाए है तूफान से किशतर निकाल के, इस देश को रखना मेरे बच्चों सम्भल के'' राजनेताओं ने इस अर्थ का अर्नथ कर दिया इसका अपराधीकरण कर दिया आज राष्ट्र के ५४१ सांसदों में से १८६ खुद मानते हैं कि उन पर घोर अपराधिक मामलें दर्ज हैं राजनीति बहूबलियों, भ्रष्टाचारियों का हथकण्डां बन गई हैं एक बहुत बड़ा व्यावस्याय बन गई है ऐसे नेताओं से राष्ट्र किस दिशा निदेश की त्बकों कर सकता है।''हर शाख पे उल्लु बैठा है - अन्जाम-ए-गुलिक्ता क्या होगा।''

एक बार गददी हाथ लग जाए पार्श से अर्श पर पहुंचते देर नहीं लगती कुछेक नेता तो अपने कारनामों की वजह से जेल चले गए। भ्रष्ट नेताओं का जिक्र किया जा, तो पूरी किताब लिखी जाए । जनता किस पर विश्वास करें। इसी राजनीति में आज भी ऐसी कई उदाहरण है जो अपना दामन पाक-साफ रखें हुए हैं- कुछेक पर राजनीति से प्रेरित जुड़े सच्चे केस भी बने हैं, लेकिन वे आज भी गुरू गोविन्द सिंह जी के वाक्य पर अडिग हैं - सूरा सो पहिचानवै। जो लरै दीव के होत। पुर्जा-पुर्जा कट मरे। कबहू ना छारै खेत। वे अपने झुझांरूपन को बरकरार रखे हुए हैं। जेल यात्रा हो या कडोर से कडोर सजा वे अपने फैसले पर अडिग हैं। गरीब मजदूर की लड़ाई लड़ रहे हैं।

वैसे तो राजनीति में भ्रष्टाचार का युग-युगांतर से चोली दामन का साथ रहा है। आचार्य चाणक्य ने साम-दाम-दंड-भेद की नीति प्रतिपादित कर शासन चलाने की बात कही। ईस्ट इंडिया कंपनी ने 'फूट डालों और राज करो' का फार्मूला अपनाया। लार्ड हेस्टिंग और लार्ड डल्हौजी को भी भ्रष्टाचार के आरोपों के कारण महाभियोग तक का सामना करना पडा। भारत आजाद होने के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी दूसरी लोक सभा में अपने भाषण में निर्माण कार्यों में भ्रष्टाचार एवं राजनेताओं की आंशिक सलिंप्तता मानी। तत्कालीन रक्षा मंत्री कृष्णा मेनन पर भी जीप खरीद में घोटाले और घटिया आयुद्ध सामान एवं असला इत्यादि के आरोप लगे। संयुक्त पंजाब के पूर्व मुख्य मंत्री सरदार प्रताप सिंह कैरों पर भी भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच के लिए दास आयोग बिठाया गया। इसी प्रकार चौ० भजन लाल पूर्व मुख्यमंत्री हरियाणा पर भी सदैव भ्रष्टाचार के आरोप लगते रहे। वे आयाराम गयालाल के जनक रहे और सांसदों की खरीद फ्रोक्त से नरसिंमहा राव की केन्द्रीय सरकार बचाने के माध्यम रहे। तत्पश्चात पूर्व प्रधान मंत्री स्व० श्रीमति इंदिरा गांधी व उनके स्व० पुत्र श्री राजीव गांधी पर भी भ्रष्टाचार के विभिन्न आरोप लगे। मुख्य राष्ट्रीय शासक दल-कांग्रेस और उनकी रा%य सरकारों पर भ्रष्टाचार के एक के बाद एक घोटालें उजागर हो रहे है और यू.पी.ए. की क्रेन्द्रीय सरकार तो भ्रष्टाचार का पर्यायवाची बनी रही। भाई भतिजावाद भ्रष्टाचार और क्षेत्रियवाद आम बात हो चुकी है।

''वाटरगेट'' में एक राष्ट्रपति को सदा के लिए राजनीति छोड़नी पड़ती है लेकिन कोल-गेट, रेलगेट, टू-जी, सेना के राशन घोटाले, आदर्श सोसायटी जैसे अनेकों घोटालों की जननी कांग्रेस का दामन सदा उजला रहता है। तत्कालीन कानून मंत्री, रेल मंत्री जुर्म साबित होने के बाद भी पाक साफ होने का दम भरते रहे। देश के पूर्व उप प्रधान मन्त्री जन नायक चौधरी देवी लाल सदैव कहते थे 'लोक राज लोक लाज से चलता है' लेकिन आज के हुकमरान भूलवश लोकराज को भ्रष्टाचार रूपी डंडे से हांक रहे हैं। नेताओं की भ्रष्ट कारगुजारी पर सार्वोच्च न्यायालय द्वारा सीबीआई की कार्यप्रणाली पर भी विपरित टिप्पणीयां की गई है, और यहां तक कि सर्वोच्च न्यायालय द्वारा सी बी आई की कारगुजारी बाबत की गई टिप्पणियों पर भी नुक्ताचीनी रहे।

कांग्रेस सरकार आरंभ से ही सी बी आई का दुरूपयोग करके मनमाने ढंग से अपने विरोधियों को प्रताड़ित करती रही। मुलायम सिंह यादव, मायावती,कानीमोझी, रेड्डी बंधु, चौ० औमप्रकाश चौटाला, डा० अजय सिंह चौटाला, डी० एम० के० के नेताओं पर रातो रात झूठा-सच्चा केस बनाकर मुजरिम करार दिया जाता है और मुजरिम उजला दामन रखते हैं। यहां तक कि कोई समाज सेवी संस्था भी अगर भ्रष्टाचार के मामले पर सरकार के विरूद्ध बोलने का साहस जुटाए तो उसको सी बी आई की लाठी से दबा गया। स्वामी रामदेव व प्रमुख समाज सेवी अन्ना हजारे का यही हश्र किया गया। राष्ट्र के पूर्व प्रधानमंत्री स्व० राजीव गांधी तथा उनके करीबी क्रातरोची के बोफ्रेरस घोटाले में संलिप्त होने के आरोपो के बावजूद सीबीआई के लचीलेपन के कारण कानूनी पंजे से मुक्त हो गया। लक्खू भाई पाठक तथा झारखंड मुक्तिमोर्चा केस में तत्कालीन

-शेष पेज 2 पर

जाट लहर के पाठकों को दीपावली की शुभकामनाएं

'k"k i!t &1

प्रधानमंत्री स्व0 श्री नरसिंह्राव के बरी होने पर सीबीआई ने सरकारी दबाव में आकर उनके विरूद्ध कोई अपील दायर नहीं की। बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो तथा उतरप्रदेश की मुख्यमंत्री के विरूद्ध तथाकथित आय से अधिक सज़्पति के मामले सरकार के इशारे पर सीबीआई द्वारा इसलिये दर्ज कराये गये ताकि उसकी पार्टी के सांसद यूपीए-2 सरकार को समर्थन देते रहे और वे अपनी लूट कसूट की दूकान चलाते रहें।

भ्रष्टाचार के कई मामलों में स्वंय सी बी आई के अधिकारियों व कर्मचारियों की मिलीभगत व संलिप्तता उजागर हुई। कोलगेट स्कैंडल की जांच कर रहे इंचार्ज एस पी रैंक के अधिकारी श्री विवेक दज़ तथा तफ्तीशी अधिकरी इंस्पैज़्टर राजेश कर्नाटक में सी बी आई कार्यालय के बाहर 7 लाख रूपये की रिश्वत लेते हुए पकड़े गए। इसी प्रकार चंडीगढ़ सी बी आई कार्यालय के डी आई जी स्तर के अधिकारी पर रेलगेट घोटाले की महत्वपूर्ण सूचनाएं लीक कर संभावित अपराधियों तक गुप्त तरीके से सूचनाएं पहुंचाने का आरोप लगा और इसकी पुज़्ता जानकारी स्थानीय सी बी आई कार्यालय के इंस्पैज़्टर बलबीर सिंह ने कैट के सज़्मुख हल्फनामा दायर करके दी। इससे पहले भी सी बी आई अधिकारियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामलों में विरोधी पक्ष से सांठ-गांठ करके रिश्वत लेने, पुलिस हिरासत के दौरान आरोपियों को गैर कानूनी ढंग से प्रताड़ित करने तथा धमकी देने के आरोप लगते रहे हैं। हाइड्रो कार्बंस के पूर्व महा निदेशक श्री वी के सिज़्बल के खिलाफ केंद्रीय जांच आयोग ने जांच करके मुकदर्मा दर्ज करने के लिए सी बी आई को निर्देश दिए गए हैं। इस अधिकारी पर आंध्र प्रदेश में सन 2004-09 के दौरान प्राईवेट कंपनियों को गैर कानूनी ढंग से गैस ज़्लाक आंबटन के गंभीर आरोप लगे जिस पर सी बी आई ने कोई कार्यवाही नहीं की।

यह भी उजागर हुआ है कि चिटफंड जैसे घोटालों में संलिप्त आरोपित कंपनियां आजकल शैडो बैंकिंग का कार्य करती रही। इस संदर्भ में कलकज़ा में स्टेट बैंक आफ इंडिया के चेयरमैन श्री प्रतीक चौधरी ने स्वंय माना कि भारत में शैडो बैंकिंग का धंधा जोरों से चला जिसका बैंकिंग व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। स्विटजरलैंड के विज़ीय स्थिरता बोर्ड के एक सर्वेक्षण के अनुसार आज भारत में लगभग 670 बिलियन डालर यानि 37 लाख करोड़ की राशी का निवेश चिटफंड जैसी कंपनियों के मार्फत शैडो बैंकिग से हुआ जिसके लिए निवेशकों को जागरूक करना आवश्यक है। रिर्जव बैंक आफ इंडिया द्वारा निर्धारित बैंकिंग सिस्टम में निवेशकों को पैसे जमा कराने के लिए कम से कम सात दिन का समय दिया जाता है जबकि शैडो बैंकिग द्वारा निवेशकों से एक दिन के लिए भी पैसा जमा करवा लिया जाता है। इसलिए आर बी आई, एस ई बी आई (सेबी) आदि की कार्यप्रणाली पर नजर रखते हुए सज़्त कानून बनाने की आवश्यकता है।

जून 1975 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायविद श्री जगमोहन लाल सिन्हा द्वारा बरेली से चुनाव लड़ने पर 6 साल की पाबंदी लगाने पर पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 श्रीमति इंदिरा गांधी द्वारा आंतरिक कलह की आड़ में आपात स्थिति लागू कर कानून में बदलाव कर दिया कि प्रधानमंत्री के चुनाव को चुनौती नहीं दी जा सकती और न्यायधीश सिन्हा को नजरबंद कर दिया गया। हरियाणा में विपक्ष के नेता चौ0 औमप्रकाश चौटाला द्वारा केंद्रीय कांग्रेस सरकार के भ्रष्ट नेताओं व प्रदेश सरकार द्वारा किए जा रहे भ्रष्टाचार व घोटालों के विरूद्ध आवाज उठाने पर वर्ष 2003-04 में तथाकथित शिक्षक भर्ती घोटेले के नाम पर उनके विरूद्ध सी बी आई द्वारा एक मनगढंत केस बनाया गया और सी बी आई कोर्ट द्वारा 10 वर्ष की सजा सुना दी गई है। 79 वर्षीय अस्वस्थ, वरिष्ठ नागरिक एवं पूर्व मुज़्य मंत्री को अपने खराब स्वास्थ्य के आधार पर उचित उपचार के लिए केवल अंतरिम राहत पाने के लिए बिना वजह लंबे समय तक विभिन्न अदालतों में बार-बार अपील करते रहे जबकि हजारों करोड़ रूपये के शारदा चिटफंड घोटाले के आरोपी की कलकज़ा उच्च न्यायालय द्वारा जमानत नामंजूर होने पर सर्वो÷ा न्यायालय द्वारा पहली ही पेशी पर जमानत दे दी गई है और अपनी मन पसंद के हस्पताल में ईलाज करवाने की छूट दे दी गई। इससे न्यायपालिका की निष्पक्षता व निष्ठा पर जन साधारण में संदेह उत्पन्न होने की संभावना बनी।

रेलगेट घोटाले में सरकारी हस्तक्षेप के कारण सर्वोच्च न्यायालय भी सी बी आई को 'पिंजरे में बंद तोते' की संज्ञा दी ज़्योंकि जांच प्रभावित करने के लिए कोल आंबटन घोटाले में न्यायमंत्री और पी एम ओ के संयुक्त सचिव की कार्यवाही उजागर हुई तथा सी बी आई केंद्रीय इन्वेस्टीगेशन संस्था से ''कांग्रेस बचाओ संस्था'' बनकर रह गई। आज हर क्षेत्र में पनप रहे भ्रष्टाचार ने देश की आन व सुरक्षा के प्रतीक माने जाने वाली खेल प्रणाली व सुरक्षा बलों को भी नहीं बज़्शा है। के वल 4 राष्ट्रमंडल खेलों में ही लगभग 70 हजार करोड़ का घपला किया गया है जिसमें खेल आयोजन समिति के प्रधान के इलावा दिल्ली की पूर्व मुज़्यमंत्री श्रीमति शीला दीक्षित, पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री जयपाल रेड्डी सहित प्रमुख हस्तियां संलिप्त रही हैं जिनको तत्कालीन प्रधानमंत्री का पूरा आशीर्वाद प्राप्त रहा। भ्रष्ट राजनेताओं व प्रशासनिक तंत्र द्वारा देश के सज़्मान व सुरक्षा के लिए समर्पित सुरक्षा सेवाओं के कल्याण के लिए आंबटित राशी भी हड़प ली गई, अपाहिजों तक को नहीं बज़्शा गया। दार्जलिंग की सुखना लेक भूमि घोटाला, लेह का राशन घोटाला, मुंबई आदर्श सोसायटी घोटलों में संलिप्त उच्च अफसरशाही द्वारा सुरक्षा बलों के नेतृत्व पर गहरा दाग लगा है। सुखना लेक घोटाले में 2 लैफ टीनैंट जनरल, एक मेजर जनरल व मुंबई आदर्श सोसायटी घोटाले में 3 पूर्व सेना अध्यक्ष व 3 पूर्व मुज़्यमंत्रियों की संलिप्तता उजागर हुई है।

लगातार बढ़ रहे घोटालों व सरकारी कोष में अनियमितताओं के मामलों में राज्य सरकारें भी पीछे नहीं हैं। हरियाणा मे कांग्रेस सरकार द्वारा सेज के नाम पर किसानों की तकरीबन 1400 एकड भूमि को मात्र 238 करोड रूपये में खरीद कर अज़्बानी ग्रुप को बेच कर लगभग एक लाख करोड का जमीनी घोटाला किया गया लेकिन प्रदेश सरकार की इस कार्यवाही के तत्कालीन केंद्रीय कांग्रेस सरकार की संप्रग अध्यक्षा द्वारा विशेष उपलज़्धि के तौर पर आंका गया जबकि इस संदर्भ में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने नवज़्बर 2010 में अपने एक निर्णय में उज़रप्रदेश सरकार की भूमि अधिग्रहण नीति पर टिप्पणी करते यहा तक कहा था कि 'गावं वासियों को उनकी जमीन से अलग करके उनकी रोजी-रोटी छीनना सरकार द्वारा समर्थित आतंकवाद कहा लेकिन हरियाणा में 25 हजारों एकड़ भूमि के सी.एल.यू. जारी कर दिये या अपने कुर्सी बचाये रखने के लिए वाड्रा या उसकी कज़्पनियों के नाम कर दी। नेताओं का चुनाव खर्चा भी वास्तविकता से बहुत दूर है विधायक का चुनाव खर्चा 15 लाख तय है और एक विधायक चुनाव में कम से कम दो, तीन करोड़ रूपये का खर्च करता है, वहीं से भ्रष्टाचार की नींव शुरू होती है।

राष्ट्र में निरंतर व्याप्त भ्रष्टाचार संबंधी घोटालों में भ्रष्टाचार में राजनैतिक संलिप्तता एवं व्यापारी वर्ग व राजनीति में घनिष्ट संबंधों की स्पष्ट तौर से पुष्टि हो चुकी है और अमेरीका की एक 'ग्लोबल विज़ीय संस्था' की रिपोर्ट के

अनुसार सन 1948 से 2008 तक भ्रष्टाचार, कर चोरी तथा अन्य अनैतिक विज़ीय कार्यों के कारण भारतवर्ष को 462 बिलियन का नुकसान उठाना पड़ा है। राजनैतिक संरक्षण के तहत श्री पी जे थामस को प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा राष्ट्र की भ्रष्टाचार संबंधी जांच की सबसे बड़ी एजेंसी 'केंद्रीय सतर्कता आयोग' का मुज़्य नियुक्त कर दिया गया स्वद्यद्य जबकि श्री थामस की नियुक्ति को उनके द्वारा तेल आयात स्कैंडल में किये गये भ्रष्टाचार व घपलों के कारण पहले ही माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गैरकानूनी करार दिया गया था। इसके बावजूद भी श्री थामस को राष्ट्र मंडल खेलों 2010 तथा 2 जी स्पैज़्ट्रम जैसे बड़े घोटालों की जांच का कार्य सौंपा गया और लिपपोती के लिए सीबीआई की स्वायज़ता के लिए मंत्रियों की कमेटी गठित की गई यानि ''वही कातिल, वही रहबर, वही मुनसिब ठहरे, अकरवा मेरे करे खून का दावा किस पर।'' पुराने राज घरानों में कुछेक नैतिकता बाकि थी जिसे अब तिलाजंलि देकर ही पर्दाप्रण होता है और राजनेता छुट फरेब, भ्रष्टाचार, अनैतिकता की सिढ़ीयां चढ़ते हुए फर्श से अर्श पर पहुंच जाता है और जनता ठगी सी महसूस करती है। जब तक वह जागरूक होता है नया अध्यय लिखना शुरू हो चुका होता है।

उज़र प्रदेश में भी निर्धन नागरिकों को खाद्यान्न उपलज़ध कराने सज़्बन्धि एक बड़ा घोटाला उजागर हुआ। बी बी सी की गीता पांडे की एक रिपोर्ट के अनुसार सार्वजनिक विरतण प्रणाली के तहत सार्वजनिक हित के लिए काम के बदले अनाज तथा बच्चों को स्कूल में भोजन बांटने के इस घोटाले में अनाज को भातरवर्ष की सीमा से बाहर बंग्लादेश व नेपाल तक उंचे दामों पर बेच दिया गया जिसमें राज्य के 54 जिलों के उच्च अधिकारियों से लेकर निम्न स्तर तक के कर्मचारी शामिल हैं। इस बड़े घोटाले की जांच कर रही सी बी आई ने तो एक बार असमर्थता व्यक्त करते हुए कहा था कि इसकी निष्पक्ष जांच के लिए उनके पास पर्याप्त कर्मचारी नहीं है ज़्योंकि इस घोटाले के लिए 50 हजार पुलिस केस दर्ज करवाने पड़ेंगें और इस सारे घोटालें में राज्य सरकार को 42.6 बिलियन डालर का घाटा उठाना पड़ा।

भ्रष्टाचार में राजनैतिक सरंक्षण का एक अह्म पहलू यह है कि भारत में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए सरकारी तंत्र में ढीलापन व राजनैतिक इच्छा शक्ति की कमी है। यू0के0 में सांसदों द्वारा पेश किये गए मामूली झूठे बिलों की जांच के लिए 'सांडरा लेविल' एवं 'पौली कुटरीज' नामक जांच संस्था के द्वारा जांच में लिप्त पाए गए सांसदों को तुरंत निष्कासित करके गबन की राशी की रिकवरी कर ली गई लेकिन भारत में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है। पीड़ित जनता द्वारा धरने आदि के माध्यम से विरोध प्रकट करने पर भी कुछ नहीं किया जाता। भारतीय प्रशासनिक सेवा के एक पूर्व अधिकारी रघुनंदन थोनीपारबिल द्वारा भ्रष्टाचार की जानकारी के लिए चलाई गई एक वैबसाईट पर केवल चार मास में ही 3000 से अधिक लोगों द्वारा रिश्वत देने की शिकायतें दर्ज कराई गई। ये बातें निसंदेह इस तथ्य की सूचक है कि निसवार्थी लोग जब अपने गुनाहों की सजा से बचने का कोई रास्ता नहीं ढूंढ पातें तो कैसे कैसे राजनितिक ड्रामें करते हैं।

इसलिए भ्रष्टाचार खत्म करने के लिए संपूर्ण सिस्टम में वांछित प्रशासनिक सुधार करना बहुत जरूरी है ज़्योंकि भ्रष्टाचार के नित नए-नए तरीके व विवाद हमारी कमजोर हो चुकी प्रशासनिक व्यवस्था पर कुठाराघात कर रहे हैं जिन पर समय रहते नियंत्रण पाना बहुत जरूरी है। प्रशासन में निष्पक्षता व पारदर्शिता लाने के लिए सार्वजनिक सेवाओं को सक्षम, बेहतर व ईमानदार बनाया जाए। प्रशासन व सरकारी तंत्र को सक्षम व प्रभावी बनाने के लिए राजनैतिक दखल अंदाजी को रोका जाना बहुत आवश्यक है जिसके लिए जन नायक ताऊ देवीलाल द्वारा वर्षों पहले सुझाया गया 'जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों को वापिस बुलाने' का प्रावधान लागू किया जाना बहुत आवश्यक है जिसको भ्रष्टाचार के विरूद्ध संघर्ष कर रहे प्रसिद्ध समाजसेवी अन्ना हजारे ने 'राईट टु रिकाल' के तहत अपने अभियान में शामिल किया है जो कि इस घातक समस्या के निवारण के लिए रामबाण सिद्ध हो सकता है। इसलिए आज सभी को अन्ना हजारे व उनकी टीम का अनुसरण करते हुए समस्त राजनैतिक व व्यक्तिगत मानसिक व्यवस्था में परिवर्तन लाना चाहिए ताकि मौका प्रस्त राजनीतिज्ञों व सज़ाधारियों के संरक्षण में पनप रहे भ्रष्टाचार संबंधी घोटालों से छुट्कारा पाया जा सके।

लेखक हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक, सतर्कता विभाग हरियाणा के मुखिया के अतिरिक्त सुरक्षा बलों व मानव अधिकारों के विशेषज्ञ भी हैं।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0 (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ज्यूरौ प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ एवं
अखिल भारतीय शहीद सज़्मान संघर्ष समिति

यदि कबीर जिन्दा होते तो आजकल के दोहे ये होते

y{e.k flag Qkxkj

न्यू सदी से मिल रही, दर्द भरी सौगात!
बेटा कहता बाप से, तेरी क्या औकात!

अब तो अपना खून भी, करने लगा कमाल!
बोझ समझ माँ–बाप को, घर से रहा निकाल!

पानी आँखों का मरा, मरी शर्म और लाज!
कहे बहू अब सास से, घर में मेरा राज!!

भाई भी करता नहीं, भाई पर विश्वास!
बहन पराई हो गयी, साली खासमखास!!

मंदिर में पूजा करें, घर में करें क्लेश!
बापू तो बोझ लगे, पत्थर लगे गणेश!!

बचे कहाँ अब शेष हैं, दया, धर्म, ईमान!
पत्थर के भगवान हैं, पत्थर दिल इंसान!!

पत्थर के भगवान को, लगते छप्पन भोग!
मर जाते फुटपाथ पर, भूखे, प्यासे लोग!!

फैला है पाखंड का, अन्धकार सब ओर!
पापी करते जागरण, मचा–मचा कर शोर!!

पहन मुखौटा धर्म का, करते दिन–भर पाप!
भंडारे करते फिरें, घर में भूखा बाप!!

नई सदी के क्या उल्टी सोचते हैं आप!
बुरे कर्म करने पर भी नहीं लगते पाप!!

न्याय–तन्त्र की महान विभूति–लोकायुक्त जस्टिस प्रीतमपाल

& eghiky vk;l

lQyrk dk ,d dkbZ iFk ugha]
foQyrk dh xkn esa gh thr gSA
iFk esa ;fn 'kwy u gksrs dkaVks dk vkHkkl u gksrk
eafty&eafty gh jg tkrh ekuo dk bfrgkl u gksrkA

एक रोज मैं ओमप्रकाश ढाण्डा सदस्य स्वतन्त्रता सम्मान समिति हरियाणा के साथ लघु सचिवालय चण्डीगढ़ गया तो एक नेम प्लेट पर लोकायुक्त जस्टिस प्रीतमपाल का नाम पढ़कर कुतुहलवश उनसे पूछने लगाा कि यह महानुभव जी कौन है? मैंने इनकी बड़ी प्रशंसा सुनी है। उन्होंनें मुझे बताया कि यह जाटों में एक बहुत बड़ी शख्सियत है। दैदिक धर्म के दीवाने और आर्यसमाज के सतम्भ भी है। यह सुनकर मेरे ह्रदय में जातीय अनुराग उमड़ आया। मैंने उनसे मिलने की जिज्ञासा प्रकट की तो उन्होंने तुरन्त मिलवाया। जिस आत्मीयता से वे मिले वह क्षण मुझे जीवन भर स्मरण रहेगा। मेरा परिचय बतौर इतिहासकार दिया गया। बातों ही बातों में जस्टिस प्रीतमपाल ने बताया कि आज वे जो कुछ भी है एक विचार शक्ति के बलबूते पर और आर्यसमाज की बदौलत हैं। मैं उनके सद् विचारों से बड़ा प्रभावित हुआ। उनके कक्ष से बाहर निकलते ही श्री ओमप्रकाश ने मुझ से कहा कि ऐसी महान विभूति का संक्षिप्त जीवन वृत्त ^tkV T;ksfr* पत्रिका के माध्यम से युवा पीढ़ी के पठनार्थ अवश्यक अंकित किया जाना चाहिये ताकि युवा वर्ग इनके इतिवृत्त से अपने जीवन को दशा और दिशा दे सके। मैंने अपने निवास स्थान पर पहुंचते ही सर्वप्रथम उन द्वारा लिखित सादर भेंट की गई पुस्तक 'विचार शक्ति का चमत्कार' आद्योपान्त पीढ़ी जो पाया कि मनुष्य यदि आत्मविश्वास के साथ उच्च और पवित्र विचार रखते हुए ठिक दिशा में पुरूषार्थ करता चला जाट तो निःसन्देह उसे मंजिल अपने आप ही मिल जाती है। उनका संक्षिप्त जीवन परिचय युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणार्थ लिखा गया है।

पाठकगण!

यह बात सोलह आने सत्य है कि जिस कौम का इतिहास नही होता वह कौम मृत है। जाट कौम के साथ भी ऐसा ही हुआ है। पहले पहलइस कौम के महनीय व्यक्तित्व अपनी कौम की प्रगति विवरण नहीं लिख सके जिसका नतीजा यह हुआ कि इतिहासकारों की लेखनी भी कुन्द होकर रह गई। अब जाट कौम में इस ओर काफी जागृति पैदा हुई है और अब प्रो. जबदीश कुमार गहलावत सरीखे व्यक्तित्व 'जाट ज्योति' पत्रिका के माध्यम से प्रयास इस दिशा में कर रहे हैं, जो कौम के लिए स्तुत्य कार्य है।

जाट कौम में अनेक ऐसे महान व्यक्ति हुए हैं तथा वर्तमान में भी हैं, जिन्होंने कौम के उत्थानार्थ के लिए अपना जीवन समर्पित किया हैं। ऐसे महापुरूषों के कृत्य भावी पीढ़ी में त्याग, सामाजिक, मूल्यों के प्रति आस्था, कुछ बनने, बनकर दिखाने और जातिय गौरव को पैदा करने में मददगार साबित होते हैं। अतः कौम में ऐसे भाव पैदा करने के लिए आवश्यक है कि ऐसे महानुभावों के कृत्यों को, इतिवृत को लिपिबद्व किया जाये और उसे समाज के सामने प्रस्तुत किया जाए ताकि उसे पढ़कर आगे आने वाली पीढ़िया अपने नुस्खों पर गौरव कर सके तथा उन्हें ऐसे ही कृत्य करने की प्रेरणा मिल सके। यद्यपि ऐसे महापुरूष किस एक जाति विशेष की सम्तति न होकर समूचे राष्ट्र के गौरव होते हैं, लेकिन फिर भी इससे कौम में जातीय अतीत के इतिहास में अभिरूचि एवं स्वयं को अपने ऊपर गौरव करने की भावना पैदा होती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए श्रृंखला–बद्ध चरित्रनायकों की श्रेणी में ऐसे गुणों के आगार, विचारशील व्यक्तित्व पर अपनी लेखनी सतत प्रवाहित कर रहा हुँ जिसने अथक परिश्रम करके विचार शक्ति के बलबूते पर पहले एक आदर्श अध्यापक, फिर एक सफल श्रेष्ठ अधिवक्ता तथा उसके पश्चात् जिला एवं सत्र न्यायाधीश, फिर पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के रजिस्ट्रार जनरल, तत्तपश्चात् स्थाई तौर पर उच्च न्यायलय के न्यायधीशपद को सुशोभित किया। निष्कलंक सेवानिवृति होने पर मुख्य न्यायाधीश की संस्तुमि पर यू.टी. चण्डीगढ़ स्टेट कन्जयूमर कमीशन के अध्यक्ष पद पर नियुक्त होकर अब वर्तमान में हरियाण के लोकायुक्त बनकर हमारे समक्ष अनन्यतम उदाहरण प्रस्तुत किया है। संभवतः ग्रामीण विधा में पला बढ़ा साधारण किसान के घर पैदा हुआ यह व्यकितत्व एकमात्र ऐसा आदर्श है जो आत्माश्लाघा से कोसों दूर ईमानदारी का पर्याय बनकर अपनी चरित्रिक निधि से समाज को सवासित कर रहा है। पुरूषार्थ से प्राप्त उन्नति के सोपन पर चढ़े इस महान विभितू पर हमें गर्व है।

thou mudk ugha ;f/kf"Bj tks mlls Mjrs gSA
og mldk tks pj.k jksi] fuHkh; gksdj yMrs gSA

सामाजिक दृष्टि से महार्षि दयानन्द की विचारधारा के अनुयायी, आर्यसमाज की भट्ठी में तपकर कुन्दन, महात्मा गांधी के आर्थिक दर्शन के प्रबल समर्थक, प्रशासनिक क्षमता में सरदार पटेल के समान गम्भीर, निर्विवाद शख्सियत, श्रेष्ठ आचरित जन–ईमानदारी के पर्याय, निडरता के धनी, विचारवान लेखक, न्याय तन्त्र के शिखर पुरूष न्यायमूर्ति लोकायुक्त प्रीतमपाल जी भारत माता के सच्चे सपूत हं। ''विचार ही मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति व सम्पत्ति है'' के आदर्शमय वाक्य से अपने जीवन को उन्नमय बनाने वाले जस्टिस प्रीतमपाल जी का जीवन न्याय तन्त्र का प्रथम पंक्ति तक की यात्रा का अनूठा दस्तावेज है जो नई पीढ़ी के लिए प्रेणास्त्रोत है।

किसी भी व्यक्ति के जीवन और कार्यों का मूल्यांकन करना आसान नहीं होता, विशेषकर उस पुरूष का तो और भी कठिन होता है जिसके स्कनधों पर न्याय का वजूद टिका हो। निःसन्देह ऐसे व्यक्तित्व का मूल्यांकन दुःसाध्य है जिसका जीवन अत्यन्त प्राणवान और जिसकी प्रवृत्तियां बहुत ही व्यापक रही हो। न्याय तन्त्र की महान विभूति जस्टिस प्रीतमपाल का व्यक्तित्व तो इतना प्रखर और जीवन प्रवृत्तिमय है कि उन सब कृत्यों का इसे छोटे से लेख में चित्रण करना असम्भव ही है। न्याय की वेदी पर यह दूरदर्शी चितेरा सतत जागरूक रहा कि जीवन में किसी भी प्रकार का कोई चारित्रिक दाग न लगने पाए। इस चौकसी को गले लगाये हुए आज गुणों का आगार बनकर हमारे सम्मुख लोकायुक्त जैसे गरिमामय पद पर सुशोभित हो रहा है। इस पद पर नियुक्त किए जाने वाले मामले में संभवतः यह ऐसी विभूति है जिस पर विपक्ष की भी सर्वसम्मत मुहर लगी है।

भ्रष्टाचार उन्मूलन के स्रजक, न्यायमूर्ति प्रीतमपाल का वकालती जीवन व्यावसायिक रूप में यद्यपि किसानों, जमीदारों, उद्योगपतियों, कर्मचारियों के साथ प्रगाढ़ सम्बन्ध रूप में भी रहा जो कानूनी पेशे की खुराक है लेकिन लूट खसोट के जरिये इन्होंने किसी मुकदमें की पैरवी नहीं की। न्यायाधीश बने तो न्यायाधीश की आसान्दी के ठीक पीछे ''सत्यमेव जयते'' आदर्श वाय तथा ''यतो धर्मस्ततो जयः'' का भी इन्होंने बखूबी ध्यान रखा। न्याय के सिंहासन पर बैठने और इनहें शिखर पर पंहुचाने का काम इनकी अटूट निष्ठा और इनके बौद्धिक चरित्र ने किया है। जस्टिस प्रीमपाल ने पवित्रता और न्याय का वजूद राजनैतिक उथल–पुथल के बीच भी कायम रखा है जहां प्रवचना, आत्मप्रवंचना प्रायः

गुस्से को शर्बत के घूंट की तरह पीजाओ, क्योंकि जहां तक उसके अनत का सम्बध है, इससे अच्छी और आनन्ददायक वस्तु नहीं हैं। अज्ञात

चारित्रिक शुद्धता को नष्ट कर देती है। एक न्यायचिद कुर्सी पर विराजमान रहते हुए सत्य को अंगीकार करने से खतरा होने पर भी जस्टिस प्रीतमपाल कभी सत्य से विमुख नहीं हुए और न सुविधाजनक होने के कारण इन्होंने कभी असत्य से रिश्ता जोड़ा। छल प्रपंचपूर्ण कूटनीति, राजनीति से मिलने वाली निकृष्ट और सुगम सफलता से प्रीतमपाल का प्रबुद्ध मस्तिष्क हमेशा स्पष्ट रूप से अलग रहा है। ऐसी नीयत की यह पवित्रता और सत्य न्याय के प्रति अटूट लगन ही इनकी सबसे बड़ी देन है।

वैदिक वर्ण आश्रम व्यवस्था के छिन्न–भिन्न हो जाने के बाद प्रत्युत् यूं कहिये कि बौद्धकाल के बाद देश की आजादी मिलने तक न्यायतन्त्र के सिद्धान्तों के आधार पर न्याय करने वाली एक आध शख्सियत, विभूति ने जाट जाति में जन्म तो लिया लेकिन हम उन्हें महान विभूति नहीं कह पाये क्योंकि कुरूक्षेत्र में पंचायती न्याय तन्त्र तथा सर्वखाप पंचायत की स्थापना करने वाले स्वयं एक राजा और स्वंय एक न्यायाधीश दोनों पदों पर पंचायत शक्ति को साथ लेकर सर्वखाप पंचायत की स्थापना करके एक महान शासक महाराजा हर्षवर्धन ने अपने न्याय के द्वारा, अपने परोपकारी कृत्यों द्वारा अपनी दनशीलता के द्वारा, अपने नैतिक गुणों के द्वारा अपने आपको एक महान विभूति सिद्ध कर दिखाया। वे पहले जाट किसान शासक थे, पहले न्यायधीश थे जिन्होंनें किसान होते हुए ग्रमीण लोगों की भलाई के लिए पंचायत प्रणाली लागू करके पंचायती न्याय व्यवस्था स्थापित की। जिसके क्रियाफलस्वरूप चीनी यात्री ह्यूनसांग तथा अन्य विदेशी यात्रियों ने राजा हर्षवर्धन राज्य की तथा न्याय प्रणाली की प्रणाली की प्रंशसा की थी। उसकी न्यायप्रियता के कारण उसका राज्य लगभग सम्पूर्ण भारतवर्ष में फैला और दीर्घकाल तक कायम रहा। महाराजा हर्षवर्धन अन्य सद्गुणों के साथ–साथ विद्वान भी था और उसने संस्कृत के ग्रन्थों की रचना भी की थी। उनके निधन के बाद देश की आजादी तक दीर्घकाल तक न्यायतन्त्र के सिद्धांतों व आदर्श के रूप में अपनाने वाली कोई महान शख्सियत नजर नहीं आई।

हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जिसमें समय–समय पर गुदड़ी के लाल पैदा होते रहे हैं। विशेषकर शहादत की श्रेणी में तो अनेक नाम अनाम हुतात्माओं की लम्बी फेहरिश्त है लेकिन न्यायतन्त्र के शीर्ष पदों पर स्थित होने वाले व्यक्तियों की दीर्घा (विशेषतः जाटों में) अल्पीयांश है। जफरूल्ला खान, देबी सिंह तेवतिया, चौ. छाजू राम, चौ. महाबीर सिंह पंवार, चौ. अमरजीत नेहरा, चौ. दीवान चन्द, चौ. नवाब सिंह, श्री अजय लाम्बा जैसे व्यक्तित्व जाट जाति के गौरव रहे हैं। वकीलों में दीन बन्धु चौ. छोटूराम, चौ. लालचन्द जी, चौ. शहाबुद्दीन (जाट महासभा के पहले अध्यक्ष), चौ. फजल हुसैन, चौ. श्रीचन्द, चौ. लाजपत जैसे बहुतेरे उच्चकोटी के वकील न्याय तन्त्र की कसौटी पर खरा उतरकार अपना नाम कमा चुके हैं। उसी दीर्घा में जस्टिस प्रीतमपाल का नाम भी अग्रणी होता है। उनके जीवन दर्शन को देखने, पढ़ने, सुनने से ऐसा प्रतीत होता है कि वे आधुनिक समय की न्याय तन्त्र की महान विभूति हैं। वे अपने नैतिक गुणों को अपनी न्याय व्यवस्था से अलग नहीं कर पाये। उनके विचारों में न्याय करते समय अपराधी की उस पृष्ठभूमि में भी उन्होंनें विचारों के माध्यम से प्रवेश किया कि अखिर इस अपराधी ने अपराध किन परिस्थितियों में किया है? पक्ष–विपक्ष, वादी–प्रतिवादी की दलीलों को वकील की बहस के तर्क–वितर्क को भी उन्होंनें सुना लेकिन स्वंय नैतिक गुणों का पुंज होने के कारण उन बातों पर विशेषतः विचार किया कि अपराधी अपराध क्यों करता है? तथा सजा का वास्तविक अधिकरी कौन है?

न्यायमूर्ति प्रीतमपाल जी का सोचने का तरीका प्रिंस क्रोपाटिकन और दीनबन्धु चौ. छोटूराम से मिलता जुलता रहा है। एक बार प्रिंस क्रोपाटिकन ने अपने सहपाठियों से पूछा था कि आपके पढ़ने का उद्देश्य क्या है? उनमें से एक ने कहा मैं पढ़कर वकील बनूंगा और न्याय दिलाने में लोगों की सहायता करूगां। प्रिंस ने कहा मान लो तुम वकील बन गए अब तुम्हारे पास एक गरीब किसान का केस आता है, जिससे भू–स्वामी ने जमीन छीन ली है। इस किसान को पाँच वर्ष पहले भू–स्वामी ने बंजर जमीन दी थी। किसान ने उसे अपने परिश्रम से उपजाऊ बना लिया है। भू–स्वामी अब अधिक लगान मांगता है। किसान देता नहीं है इसलिए उसने भूमि छीन ली है। कानून भी यही है कि भू–स्वामी अपनी जमीन का जो चाहे भाड़ा ले। अब ऐसी स्थिति में बताओ इसमें न्याय क्या है? भावी वकील ने कहा न्याय तो सही है जिसने अपने श्रम व पसीने से उसे उपजाऊ बनाया है, वही उसका लाभ उठाये। प्रिंस ने कहा जज तो कानून के अनुसार निर्णय देने के लिए बाध्य है न। अतः पहले कानून बदलना होगा। जस्टिस प्रीतमपाल जी के समय में संभवतः कानून अड़चन न बने हों क्योंकि लोकतन्त्र प्रणाली में आजादी के बाद काफी सुधार हो चुका है। इन द्वारा दिए गए निर्णय न्याय के तराजू पर तोले गए हैं। हमारे चरितनायक डॉ. इकबाल के एक शेयर से लोगों को प्रेरणा देते रहे हैं–

[knh dk dj cyn bruk fd gj rdnhj l igyA
[knk cn l [kn iN] crk rjh jtk D;k gA

अर्थात हे इन्सान! तू अपने आपको अपने कर्म से इतना ऊँचा उठा कि भगवान भी तुझे पूछे कि तेरी चाह (इच्छा) क्या है? चस्तुतः अपने सत्कर्मों से ऊँचे उठे इस व्यक्तित्व का जीवन दर्शन अनुकरणीय है।

ईमानदारी के पोषक, वैदिक सिद्धान्त के अनुयायी, न्याय तन्त्र की जानी मानी हस्ती न्यायमूर्ति प्रीतमपाल जी का जन्म हरियाणा प्रान्त के पूर्व (पूर्व का कुरूक्षेत्र जिला) वर्तमान यमुनानगर जिले के छोटे से गावं कण्डरौली में चौ. बिशन सिंह आर्य ढ़ाण्डा जाट गोत्रिय एक साधारण किसान के घर 3 जून 1947 को हुआ। उनकी माता का नाम परशी था। जो धार्मिक सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति थी। वैदिक विचारधारा से ओतप्रोत बिशन सिंह का परिवार आर्यसमाज के रंग में रंग चुका था एतदर्थ बालक प्रीतम को उच्च चरित्र, न्यायप्रिय, कठोर परिश्रम, प्रेम, त्याग, सन्तोष, परोपकार, ईमानदारी, देशभक्ति, सेवा आदि संस्कार विरासत में मिले थे। जहां तक उनके पूर्वजों के इतिवृत्त की बात है। उनका परिवार संभ्रात (खानदानी) परिवार है। ढ़ाण्डा गोत्र आर्य क्षत्रिय चन्दगवंश जाटवंश है। जिसका प्राचीनकाल से शासन रहा है। यह गोत्र रामायणकालीन है। महाभारतकाल में भी इसका वर्णन है। माहेय जनपद ढ़ाण्डा गौत्रिय जन का शासकीय स्थान था। माहेय ऋषि, अर्चनाना, श्यावायत तरन्त और पुरमीढ़ ये सभी मन्त्रद्रष्टा तत्वज्ञ उनके पूर्वज थे। जैमनीय ब्राह्मण ग्रन्थ 1–152 अनुसार ''जमदग्निर्ह वै माहेयानां पुरोहित आस'' अर्थात प्रसिद्ध जमदग्नि ऋषि माहेयो (मल्हन् माहलाण, माहिल, माहिल, मावलिया, महला, महलावत, मोहित, ढ़ाण्डा, दाण्डकी, डंडा, डाण्डसा, ढ़ांडसा, डाण्डसाल, डांडीवाल, ढिण्डसा, डाण्डेवाल डाण्डेवाल, डांडवाल, डाण्ढोरी, ढण्ढेरी, ढण्डोलिया, डांडे, ढ़ाण्उे, मल्हन) का पुराहित था। वह परशुराम का पिता था। महर्षि पाणिनी ने अष्टाध्यामी में इन्हें 'दाण्डकी' कहा है। दाण्डकी एक गण विशेष का नाम है। वराहमिहिर ने इन्हें बृहत् संहिता में ''डण्ड'' नाम से अभिधीत किया है। राजस्थान इतिहास के लेखक कर्नल टॉड बीकानेर से 70 मील पूर्व चौपर में और सुजानगढ़ के उत्तर में द्रोणपुर नामक स्थान में दनके राज्य में थी। वही उनकी राजधानी थी। राजस्थान में 140 गावों में उनका शासन था। चौपर, हीरासर, गोपालपुर, चारवास, सौंदा, लडनू, बीदासर, मलीसीसर, खरबूरा कोट, आदि प्रमुख परगने उनके राज्य में सम्मिलित थे। उनकी यह भूमि कुल मिलाकर माहिलवाटी कहलाती थी। जाटों की परस्पर फूट के कारण उनका राज्य

जाता रहा और ढ़ाण्डा जन इस भूमि को छोड़कर फतेहपुर, झुंझनू, भटनेर, मेवाड़, हरियाणा आदि में जा बसे। अतः उनके पूर्वज भी शान्त जीवन जीने के अभिलाषी हरि की भूमि में आ बसे।

बालक प्रीतम की प्रारम्भिक शिक्षा सन् 1954 में प्रतिवेशी गांव गुमथलाराव की पाठशाला में आरम्भ हुई। उस समय शिक्षा की दशा अजीबो–गरीब थी। कई–कई कोस पैदल चलकर स्कूल जाना पड़ता था। बहुत ही कम माता–पिता ऐसे थे जो शिक्षा के महत्व को समझते थे। वह भी आर्यसमाज के प्रचार की बदौलत। शिक्षा के नाम पर किसान अंगूठा छाप, निरक्षर, शासकीय नियमों से सर्वथा अनभिज्ञ, आधुनिक कृषि सुविधाओं से वचिंत, साहूकारी ऋणों से दबे बन्धुआ मजदूरों और किसानों की हालत बड़ी ही दयनीय थी। मोटा अनाज खाकर और मोटा कपड़ा पहनकर अर्द्धदास जैसी हालत में किसान अपने दिन काटते थे। ऐसी सिथति में बच्चों का पढ़ाना आसान कार्य नहीं था। आर्यसमाज के प्रभाव से उत्साहित चौ. बिशन सिंह ने हल के बल पर खेतों में सोना उपजाकर अपनी सन्तानों को शिक्षित करना अपना परम धर्म समझ लिया था। एतदर्थ पिता के निर्देशानुसार बालक प्रीतम भी प्रातः उठकर धूल धूसरित मार्ग से पैदल चल कर नदी, नालों, झाड़, झंकड़ों को पार करते हुए शिक्षा प्राप्त्यर्थ (प्राप्त करने के लिए) जाने लगा। जैसे तैसे प्राथमिक शिक्षा का भोग लगाने के बाद बालक प्रीतम को रादौर मुकन्दलाल हाई स्कूल में प्रविष्ट करा दिया गया, जहां इन्हें प्रतिदिन 15 किलोमीटर पैदल कच्चा रास्ता तय करना पड़ता था। बाद में शिक्षा व्यवस्था की सुविधानुसार इन्होंने बड़ी बहन के घर रहते हुए राजकिय माध्यमिक विद्यालय गांव गढ़ी बीरबल (करनाल) से सन् 1961 में आठवीं कक्षा उर्त्तीण कर ली। तब तक इनके अग्रज भ्राता चण्डीगढ़ में सुव्यवस्थित हो चले थे। अतः वहां रहकर इन्होंने सरकारी हाई स्कूल सैक्टर–20 चण्डीगढ़ से 1963 में पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा अच्छे अकों से पास कर ली। परिणाम आने की प्रतीक्षा में घर पर रहकर पिता जी के कार्य में सहयोग देते हुए तब तक बालक प्रपतम इस बात से अनभिज्ञ था कि जीवन में क्या करना हैं? क्याा उद्देश्य है? क्या बनना है? मार्गदर्शन और सुझााव के दृष्टिगत पिता ने पुत्र को श्रेष्ट अध्यापक बनने की जिज्ञासा प्रकट की थी। एतदर्थ माता–पिता से संस्कारित, दया, धर्म, धैर्य, ईमानदारी, उच्च चरित्र, कर्मशीलता, सच्चाई, आस्तिकता, आज्ञा पालन जैसे गुणों से सुषासित बालक प्रीतम ने पिता के आदेश को शिरोधार्य करते हुए जूनियर टीचर का दो वर्षीय कोर्स कर लिया।

शिक्षा पर आघात न लगे, बेरोजगारी का मंजर न पसरे इस बात से अवगत इन्होंने उसी विद्यालय में शिक्षा की अलख जगाई, शिक्षक के पद पर कार्य ग्रहण किया, जिसमें इनहें प्राथमिक शिक्षा का भोग लगा था। गुमथलाराव में अध्यापक लगने का इनका पुरूषार्थ तथा पिता का स्वप्न यद्यपि पूर्ण हो गया था लेकिन विचार शक्ति ने इन्हें और अधिक आगे बढ़ने को प्रेरित किया। कुछ समय बाद 1968 में सरकार ने एक नीति बनाई थी कि सभी अध्यापकों को उनके घर से 20 किलोमीटर के अन्तराल पर स्थानान्तरित कर दिया जाए। उसी नीति के तहत शिक्षक प्रीतमपाल जी का स्थानान्तरण भी अन्तराल की भेंट चढ़ गया अर्थात् इनका स्थानान्तरण राजकिय उच्च विद्यालय यारा जिला कुरूक्षेत्र में हो गया। इस प्रकार से सभी अध्यापकों का अपने घर गन्तव्यागन्तव्य दूभर हो गया।

साक्षात्कार स्वरूप जस्टिस प्रीतमपाल जी ने मुझे बताया कि ''विचार की शक्ति अद्भुत है।'' अपने संस्मरणों की याद ताजा करते हुए उन्होंनें मुझ से विचार सांझाा करते हुए कहा कि विद्यालय की छुट्टियों के दौरान मेरा चण्डीगढ़ आना हुआ। उस समय केवल हाईकोर्ट की इमारत और वकीलों की बहस देखने, सुनने की इच्छा हुई। अभिलाषा की पूर्ति के लिए मैं एक रोज अदालत में पहुँच गया। तब हाईकोर्ट में कुल दस कोर्ट रूम थे। मै। कोर्ट रूत नं. 4 में जाकर पीछे बैंच पर बैठ गया। उस समय एक नौजवान वकील दा माननीय जजों (DB) के सामने बहुत प्रभावी ढ़ंग से अपनी बहस कर रहा था। बाद में विदित हुआ कि वे श्री जवाहरलाल गुप्ता वकील थे। जो अन्ततः पंजाब एण्ड हरियाणा हाईकोर्ट में जज बने और फिर केरल राज्य हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के रूप में सेवानिवृत्त हुए। मैंने उसी दिल वकील महोदय के तर्क–वितर्क को सुनते हुए, जज महोदय की तल्ख टिप्पणी व आदेश दिए जाने के हुकमराने को श्रवण करते हुए कोर्ट के कक्ष नं. 4 में बैठे–बैठे अपने हृदय में एक विचार प्रतिस्फुटित कर लिया कि अब तो येन केन प्रकारेण श्रम साध्य से पहले वकील और फिर जज ही बनना है। लेकिन उस समय हरियाणा में कोई लॉ कॉलेज नहीं था और अध्यापक की नौकरी छोड़कर चण्डीगढ़ कॉलेज में प्रवेश लेना अर्थिक तौर पर कठिन था। भाग्य ने पलटा खाया कि इसी दौरान एक खबर लगी कि अगले वर्ष सन् 1969 से कुरूक्षेत्र विश्वविद्यय में लॉ क्लासिज (Law Classes) शुरू होगी। उस समय चौ. बन्सीलाल हरियाणा के मुख्यमंत्री थे और उनके अध्यापक रह श्री यू.सी. सरकार जो चण्डीगढ़ से सेवानिवृत्त हुए थे को उन्होंने कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में विधि संकाय (Law Faculty) का प्रिंसीपल नियुक्त कर दिया। उस समय भवन की कमी थी, इसलिए जहां एम. ए की कक्षायें दिन में लगती थी, वहीं पर लॉ (Law) की Night Classes लगाने का निर्णय कर लिया गया। इस प्रकार से पहला विधि ा सत्र 1969 में शुरू हो गया। वास्तव में मुझे लगा ''जहां चाह वहां राह'' है। साथ में यह कहावत भी चरितार्थ हुई कि ''परमात्मा उन्हीं की सायहता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं।'' इस प्रकार से प्रभु की कृपा हुई कि मैंने अपना नाईट क्लासिज से तीन वर्ष का एल.एल.बी. का कोर्स करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब मैं स्कूल में विद्यार्थियों को पढ़ा रहा था तब मालूम हुआ कि लॉ 3 साल का परीक्षा परिणाम आ गया है और विधि संकाय में उत्तीर्ण होने का पता लगते ही मैंने वहीं बैठे सरकारी अध्यापक की नौकरी से त्याग पत्र दे दिया।

वकालत का लाईसै।स लेकर अदालती दुनिया में जस्टिस प्रीतमपाल का यह पहला कदम था कि बड़े भाइ वेदपाल के साथ करनाल में रहकर वकालत का काम शुरू किया। कुछ दिनों बाद कुरूक्षेत्र जिला बन गया। उसी के साथ ही कुरूक्षेत्र कर्मभूमि बन गई। कुरूक्षेत्र जिला अदालत में इन्होंने 1972 से 1986 अर्थात् 14 वर्ष तक निरन्तर वकालत का काम किया। वकालती जीवन के इस विस्तृत माहौल में जूनियर वकीलों के सहयोग स्वरूप जिनमें विशेषतः सर्व श्री सुभाष शर्मा, सुरेश कम्बोज, अशोक कुमार भारद्वाज, श्यामलाल जांगड़ा, श्यामसुन्दर महता, पृथ्वी सिंह बतान, राजपाल सिंह एडवोकेट आदि के नाम प्रमुख हैं, उनका सन्निध्य मिला इन्हें कईं सामाजिक, शैक्षणिक व आर्य समाज की संस्थाओं से जुड़ने का सुअवसर भी मिला जिससे इनकी ख्याति उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होती चली गई। आर्य समाज के मूर्धन्य सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरूकुल के मुख्य अधिष्ठाता के रूप में कार्य करते हुए इन्होंने उसे भैतिक सुविधाओं से उन्नति के सोपान पर ला खड़ा किया। इसके अतिरिक्त जिला और राज्य राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेकर अपना आंशिक योगदान देना इनके जीवन का क्रम बना रहा। वर्ष सन् 1986 के आरम्भ में योग्यता स्वरूप उनहें पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय द्वारा एडिशनल डिस्ट्रिक्ट एण्ड सैशन जज के पद पर नियुक्त कर दिया गया। इस पद पर रहते हुए इन्होंनें गुड़गांव, रोहतक, अम्बाला, यमुनानगर तथा हिसार जनपद को सुशोभित किया। अपनी न्यायिक यात्रा के चलते परिवेश में फिर इन्होंने जिला

रोहतक, नारनौल, भिवानी और फरीदाबाद में डिस्ट्रिक्ट एण्ड सैशन जज के पद पर न्याय तन्त्र को सुदृढ़ किया। तत्पश्चात् 2002 से नवम्बर 2004 तक इन्होंने पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के रजिट्रार जनरल पद का कार्यभार सम्भाला। अन्ततः प्रभु की असीम कृपा से 4 नवम्बर सन् 2004 को पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के स्थायी न्यायाधीश के तौर पर शपथ ग्रहण करके वह स्वप्न पूर्ण कर दिखाया जिस कक्ष में जज बनने का विचार प्रतिस्फुटित हुआ था।

जस्टिस प्रीतमपाल उन क्षणों को याद का रोमाचिंत एवं आह्लादित हो उठते हैं कि अजीब संयोग है कि आखिर उसी कोर्ट रूम नं. 4 में जहां विचार पैदा हुआ था कि एक दिल मैं भी पहले वकील और फिर जज बनूगां। इसी विचार पूर्ति की दशा में 4 तारीख सन् 2004 को मुझे जज की कुर्सी पर बैठने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैं उन क्षणों को विस्मृत नहीं कर पाऊंगा। कितना खुशनसीब है यह महामानव कि जिस कोर्ट रूम में बैठकर जज बनने का सपना देखा था, उसी कोर्ट रूम में जज की आसन्दी को सुशोभित किया। यह सब लाने का एक ही अभिप्राय है कि यदि हम जीवन में कुछ बनना चाहते हैं, उन्नति के सोपन पद आरूढ़ होना चाहते हैं, ऊँचे उठना चाहते हैं तो पहले अपने अन्दर उच्च विचारों, उच्च संस्कारों के बीज वपन करें। फिर एक दिन आयेगा कि वे बीज श्रम रूपी जल से सिचिंत व अंकुरित होकर अन्ततः एक महान वृक्ष की भान्ति आपको शीर्षस्थ कर देगें। बाधाएं आया करती हैं, मुश्किलें आया करती हैं लेकिन विचार शक्ति के समक्ष सब कुछ धराशाही हो जाता है।

ef'dyl fny dk bjkn vktekrh gS]
vKku dk inkZ vk[kks ls gVkrh gSA
gkSly dj er gkj fxjdj ,s eqlkfQj]
Bksdjsa bUlku dks pyuk lh[kkrh gSA

सतत प्रयास और दृढ़ निष्ठा से दुःसाध्य कार्य भी सम्पादित हो जाते हैं। दुर्बल मन वाला व्यक्ति यह कहकर निष्फल हो जाता है कि ''जो भाग्य में लिखा है वही होगा'' भाग्य के भरोसे मत बैठो, पुरूषार्थ ही सम्बल है। जस्टिस प्रीतमपाल जी न्यायपालिका के ऐसे आधार स्तम्भों को सर्वोपरि स्थान दिया है। इसके साथ ही वे एक विद्वान लेखक भी हैं जिनकी पुस्तक ''विचार शक्ति का चमत्कार'' को पढ़कर आज की युवा पीढ़ी आधुनिक जीवन की चुनौतियों को विजय मुस्कान में परिवर्तित कर सकती है। यह पुस्तक निस्सन्देह एक साधारण किसान परिवार से शुरू होकर भारतीय न्याय तन्त्र तक की यात्रा का अनूठा दस्तावेज तो है ही इसके साथ ही यह सफलता के रहस्यमी सूत्रों को उद्घाटित करने वाली एक संजीवनी औषध भी है। जीवन के भीषण झंझावती अनुभवों से सराबोर यह पुस्तक हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। जिस प्रकार स्वयं न्यायमूर्ति प्रतीमपाल उच्च शिखर पर आसीन हो सके। उनकी दृष्टि में विचार वस्तुतः एक ज्वाला है, क्रान्ति है, तूफान है, इसके साथ ही विचार शान्ति व सन्तुष्टि का पैगाम भी है। हर क्रान्ति के पीछे भी पहले भी एक व्यक्ति का विचार ही था।

दिनांक 3 जून 2009 का पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के पद से सेवानिवृत्त होने केउपरान्त भी मुख्य न्यायाधीश की अनुशंसा पर राज्यपाल पंजाब द्वारा उन्हें स्टेट कमीशन यू.टी. चण्डीगढ़ का प्रैजीडेंट नियुक्त कर दिया गया जहां से उन्होंने 17 जनवरी 2011 को त्याग–पत्र दे दिया। तत्पश्चात् विचार किया था कि अब तो जीवन के अन्तिम पड़ाव पर वानप्रस्थी बनकर समाज सेवा का बीड़ा उठाना है। अतः इसी दौरान मुख्यामंत्री चौ. भूपेन्दर सिंह हुड्डा ने अपनी पैनी दृष्टि दौड़ाई कि ऐसी कौन सी शख्सियत है जो भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में सक्षम व ईमानदारी पूर्ण योगदान दे सके। यह भी एक रिकार्ड सम्मत बात है कि मुख्य न्यायाधीश (पंजाब एवं हरियाणा) विधानसभा के विरोधी दल के नेता चौ. ओम प्रकाश चौटाला, स्पीकर महोदय, हरियाणा के राज्यपाल महोदय सभा का सर्वसम्मत ध्यान इस महान विभूति की ओर गया तथा सभी ने विचार–विनिमय करके सर्वसम्मति की मुहर लगाकर 18 जनवरी 2011 को उन्हें लोकायुक्त हरियाणा के गौरवपूर्ण पद की शपथ दिला दी गई। भ्रष्टाचार और अपराधा के कारण तथा उनका निवारण कैसे हो? इस विषय पर न्यायमूर्ति लोकायुक्त प्रीतमपाल जी ने राज्यपाल हरियाणा को अपनी संस्तुति और सुझाव प्रेषित किए हैं जिनका उल्लेख अग्रिम किसी मास के अंक में प्रकाशित करने का मैं. प्रो. जगदीश गहलावत जी से प्रार्थना करूगां ताकि दिग्भ्रमित हुआ युवा वर्ग मुख्य धारा में सम्मिलित होकर अपने जीवन को संवार सके। लोकायुक्त प्रीतमपाल का दैनिक जीवन यज्ञ–हवन से आरम्भ होता है। विदुरनीति का यह श्लोक इन पर खरा उतरता है।

v"Vks x.kk% iq:"ka nhi;fUr] çtk p dkY;k p Jre
ne'pA
ijkØe'p cgHkkf"krk p] nkua ;Fkk'kfDr ÑrKrk pA

अर्थात् बुद्धि, कुलीनता, शास्त्रज्ञान, इन्द्रियनिग्रह, पराक्रम, अधिक न बोलने का स्वभव, यथाशक्ति दान देना और कृतज्ञता से आठ गुण पुरूष की शोभा बढ़ाते हैं और इन्ही सद्गुणों से मनुष्य के चरित्र का गठन होता है। आठों गुणों के समन्वय ने उनहें सामाजिक, प्रशानिक परिदृश्य पर अग्रणी पक्ति का अधिकार बना दिया। न्यायमूर्ति लोकायुक्त प्रीतमपाल जी की सफलता के सफर में उनकी धर्मपत्नी मायादेवी का बहुत बड़ा हाथ रहा है। वह कुशल गृहणी के साथ–साथ आदर्श नारी है।नारी जीवन मुख्यतः पत्नी और माता दो रूपों में विभक्त है। शिक्षित पत्नी परिवार के लिए वरदान है। स्नेह, सुख, शान्ति और श्री की वर्द्धिका है। समन्वय, सामंजस्य और समझौते की साक्षत् प्रतिमा है। शास्त्रों में वर्णित श्रेष्ठ पत्नी के छः लक्षण हैः–

dk;s"kq eU=h] dj.ks"kq nklh] HkksT;s"kq ekrk] je.ks"kq jEHkkA
/kekZuqdwyk {kek /kfj=h] Hkk;kZ p "kkM~x.;orh g nqyZHkkA

ये सभी गुण मायादेवी जी में समाविष्ट हैं। ऐसा अनूठा समाज सेवा का उदाहरण संभवतः विरले परिवार में ही देखने को मिलेगा कि जिस परिवार की ओर से 25–30 लोगों के लिए प्रतिदिन सांयकाल का भोजन घर में बनवाकर साथ लगते अस्पताल में रोगियों के लिए भिजवाया जाता हो। समय–समय पर मुफ्त मैडिकल जांच एवं चिकित्सा कैम्प उनके प्रसिद्ध समाजसेवी कृत्य हैं। परमात्मा की विशिष्ट अनुकम्पा से न्यायमूर्ति प्रीतमपाल का बड़ा बेटा अजयपाल यू.एस.ए. से एल.एल.एम. करके सर्वोच्च न्यायालय में वकालत कर रहा है। इसके साथ ही वह एडिशनल एडवाकेट जनरल हरियाणा के पद पर भी नियुक्त है। उनकी बड़ी बेटी प्रवीण आर्या एम.डीएस. करके सीनियर डैन्टल सर्जन सिविल हस्पताल गुडगांव में नियुक्त है। उससे छोटी पुत्री सुखदा प्रीतमपाल जो डबल गोल्ड मैडलिस्ट है, एल.एल.एम. और पी.एच.डी. करके हरियाणा जुडशियल सर्विसिज में जुडिशियल मैजिस्ट्रेट कम सिविल जज के पद पर पंचकुला में नियुक्त है। सबसे छोटी पुत्री वन्दना ने दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स से एम.ए. की हुई है। वह शिक्षा और अध्यापन के क्षेत्र में कार्यरत है। उनका सबसे छोटा पुत्र अमनपाल जो विधि संकाय में कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय का गोल्ड मैडलिस्ट है और पंजाब एवं हरियाणा हाईकार्ट में वकालत करता है। अमनपाल की धर्मपत्नी अनुपाल पंजाब विश्वविद्यालय की गोल्ड मैडलिस्ट है तथा उसी के साथ वकालत करती है और पंजाब सरकार की ओर से हाईकोर्ट में असिस्टैन्ट एडवाकेट जनरल के पद पर कार्यरत है। न्यायमूर्ति प्रीतमपाल जी का जीवन समाज सेवा को समर्पित है। ऐसे व्यक्तित्व को महान विभूति कहना हमारी अपनी दुहाई नहीं उनकी अपनी कमाई है।

जिस मनुष्य ने आत्मा सयंम की साधना नहीं की है, वह कभी सच्ची खिदमत नहीं कर सकता। अज्ञात

हल–बाकी हैं सुनहरे दौर की यादें

& Mk- egkflg ifu;k

dHkh [krh&fdlkuh lLÑfr dh dYiuk gy ds fcuk ugha dh tk ldrh FkhA ikjkf.kd lnHkkZ o ykddFkkvksa esa gy ds egRo dk ftØ gSA egkjktk d:: ls jktk tud rd ds gy pykus dk ftØ gSA vkt Hkys gh gy gkf'k;s ij g] yfdu mldh ;kns ykdthou esa thor jgsxhA vf/kd tkudkjh ds fy, i<s ;g Kkuo/kZu ys[kA

देहात में हल की उपयोगिता अत्यंत पुरानी है। इसकी परम्परा को शिव से जोड़कर भी देखा गया है। शिव को पार्वती हल चलाने तथा धरती की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है। इस घटना का प्रमाण इस हरियाणवी लोकगीत के माध्यम से मिलता है, जिसमें शिव पार्वती को धरती पर हल चलाने के लिए कहती है–gy gkdk egkno] gy gkdk b'k] nfu;k dk /k/kk ls yxk; n;k th! अर्थववेद में छह बैलों द्वारा खींचे जाने वाले हल को सीर कहा है। सहिंता, ग्रन्थों, ब्रह्मण ग्रंथों और अन्य वैदिक साहित्य में आठ और बारह बैलों द्वारा हल चलाए जाने का वर्णन भी मिलता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार कुरूक्षेत्र के नाम से 48 कोस की भूमि, जिस क्षेत्र पर महाराज कुरू ने अपना हल चलाया था, विश्वविख्यात है। भगवान विष्णु अभिभूत होकर धरती पर अवतरित हुए और कुरू के सामने प्रकट हुए। इसके अतिरिक्त पौराणिक साहित्य में भगवान श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम के सबसे प्रमुख अस्त्र हल का ब्यौरा मिलता है। यही कारण है कि बलराम के जन्मदिन को हलषष्ठी तथा हल छठी के रूप में मनाया जाता हैं। देहात में अमास्या अथवा मौस के दिन भी हाली हल नहीं चलाता। राजस्थान के कालबंगा पुरातात्विक स्थल से हल द्वारा खींचे गए निशानों के प्रमाण मिलें हैं। इसी प्रकार हरियाणा के बनावली पुरातात्विक स्थल से पांच हजार वर्ष पुराना एक मिट्टी का हल भी प्राप्त हुआ है। देहात में हाली तथा हल को अन्नदाता के रूप में पूजा जाता है। यही कारण है कि गोवर्धन पर इसकी विशेष पूजा भी होती है। हल हांकने वाले को हाली कहा जाता है। हल मूलतः नीम, शीशम, कीकर, कालियासर की लकड़ी का बना हुआ होता है। हल का नीचे वाला भाग अधिक मोटा और भारी होता है, जबकि ऊपरी भाग पतला होता है, जिसे चोटिया कहा जाता है।

हल के नाचे के मोटे और भारी भाग में एक लकड़ी का नुकिला उपकरण लगा होता है, जिसे चू तथा कुश कहते हैं। इसके लिए लोकजीवन में पणिहारी शब्द का प्रयोग भी किया जाता है। चू में लोहे का बना एक पैना नुकीला औजार होता है, जिसे फाली व कुस्य भी कहते हैं। फाली तथा फाला एक–डेढ़ बिलांत लम्बा होता है। हल के निचले भाग में सबसे पहले डांसा तथा पणिहारी लगाई जाती थी, जो आरम्भ में लकड़ी की होती थी, लेकिन बाद में वह लोहे की भी प्रयोग की जाने लगी। उसके पश्चात् कैत तथा पात का प्रयोग किया जाता था और पात के पश्चात लोहे की फाली तथा फाले का उपयोग किया जाता था।

हल के भीतरी भाग में जहां फाली फंसाई जाती है, गहरी लंबी धारा सी कटी होती है, जिसे रैगरी कहते हैं। चू की लकड़ी का नोकदार छोटा भाग अणी कहलाता है। ऋगवेद और अर्थववेद में हल में लगाई जाने वाली फाली के लिए स्तेग शब्द का प्रयोग हुआ है। लगभग छह–सात हाथ लम्बी चौड़ी लकड़ी की मजबूत पट्टी जिसका एक सिरा हल के निचले भाग बेझ में स्थित रहता है तथा दूसरा भाग जूए पर टिकता है, उसको हलस तथा हल कहते है। हलस के अगले भाग में तीन गोलाकर छिद्र होते हैं, जिन्हें स्याल, गट्टे तथा छेद कहा जाता है। हल का पिछला मोटा तथा भारी भाग, जिसमें हलस ठुकी होती है, को हल की छाती कहते हैं। हल हांकने के लिए हल में नंडेन व जोतणी के सहारे ही नाड़ी से बांधा जाता है। हल के साथ हलस को जोड़े रखने के लिए हल की बेझ में हलस के साथ एक लकड़ी की तिरझी कटी हुई लगभग एक फुट लम्बी फट्ठी लगाई जाती है, जिसे गांगड़ा या फणिह कहते हैं। हल को खींचने के लिए जोते गए बैलों के कंधे पर लकड़ी का जो उपकरण प्रयोग किया जाता है, उसे जूआ कहा जाता है। जूए के बाहरी ओर दोनों किनारों की तरफ नीचे की ओर बनाए गए छिद्रों में एक खूंटी लगाई जाती है, जिसे सिलम कहा जाता है, जबकि भीतरी भाग में लगी दो खूंटियों को गोथड़ा कहते हैं। बैलों के जूए में लगाई जाने वाली सण की बुणी हुई पट्टियों को जोत की संज्ञा दी गई है। जूए के वह भू–भाग जो बैलों की गर्दन पर रखे जाते हैं, उनको कांध कहते हैं। एक पद्यात्मक कहावत देखिए, जिसमें साम्मण हवा चले और बारिश की कमी न रहे, तो बीवी भी अपने पति को हल जोतने के लिए प्रेरित करती है– lko.k igyh ipeh] tS /kMs ds ckn] rw d.krk gy tkfM;k] eSa rjh Nhd gkjA

किसान जो हल चलाते हैं, उन्हें अच्छी तरह मालूम है कि हल से पहली और दूसरी बाही तो महज शुरूआत है, तीसरी बाही को ही हल की बाही समझना चाहिए–पाड़ धराड़ दोस्सर कोस्सर, बाहन तीस्सर। गहरी हल से गहरी बिजाई करने से फसल का काल समाप्त होता है, इसका संकेत इस लाकोक्ति से भी मिलता है– gy ykX;k ikrky] VVX;k dkyA जो किसान हर रोज अपने खेत में हल चलाता है, तो उसका काल भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता, यह संदेश इस उक्ति के माध्यम से दिया गया है– tk fur mB ckgos Qky] mldk ds djxk dkyA इसी प्रकार नौ बार हल चलाकर यदि एक बार कस्सी से मिट्टी पलट दो, उससे वह मिट्टी बहुत अधिक उपजाऊ जाती है, तभी तो यह कहावत प्रचलित है–नव नसी, एक कसी। खेती दो हलों से होती है, अगर एक हल है तो सब्जी की काश्त करनी चाहिये, एक बैल की निस्बत तो खुदाली ही अच्छी है, तभी तो कहा गया है– दो हल खेती, थक हल बारी, एक बैल तै भली खुदाली। लोकजीवन में यह भी कहावत प्रचलित है कि जिसके पास दस हल हो उसके पास सदा लक्ष्मी रहती है। पांच हल वाले के पास सिर्फ धन रहता है, तीन हल वाले को केवल अनाज रहता है और जिसके पास सिर्फ एक हल हो, तो वह कर्जदार ही रहता है– दस हल लक्ष्मी, पांच हले धनाम्, तीन हले बखतम, एक हले ऋणम्। किसानी संस्कृति में बैल से हल चलाना शुभ माना गया है, तभी तो कहा गया है– जिस घर में बैल हल बाह, उसको ज़र

की क्या परवाह।

इस गीत के माध्यम से किसान को खेती की संपूर्ण सीख देने का प्रयास किया गया है—खेती खसम सेती होरी सै, तुम खून करो रूलाब, लगज्या पाल नाज के खेत मैं पहर के तड़कै हल जोड़ी करो विचार, पात—फाली और पछेल्ला पहले हल का करो सिंगार, बर्र—बर्र हल चालै खेत मैं, रोट्टी ल्यावैं घर की नार, थोड़ी देर आराम करो, फिर खाणा खाओ करकै पियार, दूसरी—तीसरी—चौसर करकै, करकै, उपर तैं मारो खार, बो कै बीज पाअ्ड़ द्यो क्यार, खेती उपजै बेसुमार।

हरियाणा में हजारों वर्षों से चली आ रही हल, हाली की परम्परा दिन—प्रतिदिन खत्म होती जा रही है। इसके अतिरिक्त हल से जुड़ी हुई परम्पराएं भी लोकसमाज में फीकी पड़ रही हैं, क्योंकि दिन—प्रतिदिन खत्म होती जा रही है। इसके अतिरिक्त हल से जुड़ी हुई परम्परागत खेती का स्वरूप बदल रहा है, जिसका असर हल तथा किसानी संस्कृति पर पड़ा है, किंतु हल के बिना किसानी संस्कृति का बखान नहीं किया जा सकता।

अनुव्रती पुत्र

uj\Un vkgtk food

संसार में मनुष्य के रूप में जन्म लेने के उपरान्त हमारा नैतिक कर्तव्य बन जाता है कि हम अपने जन्मदाता माता—पिता के प्रति पूरी निष्ठा से सेवाभाव रखते हुए उनका अनुव्रती होकर अपने पुत्र धर्म का निर्वहन करें। इस सदंर्भ में परमपिता परमेश्वर द्वारा सृष्टि की उत्पति के साथ ही समस्त प्राणियों के लिए आचार संहिता के रूप में दिये गये ईश्वरीय ज्ञान वेद में भी स्पष्ट आदेश है vuozr% firq% iq=k ek=k Hkorq leuk% अर्थवेद 3/30/2 अर्थात पुत्र पिता के उद्देश्यों व्रतों के अनुकूल चलने वाला हो तथा माता पिता के साथ प्रीति युक्त मन वाला हो। इस प्रकार पुत्र धर्म के निर्वहन के लिए पिता के व्रतों के अनुकूल चलना अनिवार्य बताया गया। वैसे भी लौकिक व्यवहार में हम अपने जीवन में अपना तनिक सा उपकार करने वाले का भी धन्यवाद विनम्रता पूर्वक करते हैं। यदि गर्मी के मौसम में कोई शीतल जल पिता दे तो उसका हम सभी धन्यवाद करते हैं तो फिर पिता के उपकारों को हम कैसे भुला कर कृतध्नता दोष या पाप के भागी बन सकते हैं।

लेकिन अब यहां एक और प्रश्न उत्पन्न होता है यदि किसी का पिता शराबी, कबाबी और अधार्मिक हो तो क्या पुत्र को अपने पिता का अनुकरण करते हुए स्वयं भी बिगड़ जाना चाहिये या फिर ऐसे समय में पिता के इस अधार्मिक आचरण के विपरित चलना चाहिये। यहां इस बात को एक अन्य लौकिक उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं यदि कोई आगे चल रहा वाहन सड़क पर बने गड्ढे में फंस जाता है तो हम उसकी विपरित स्थिति देखकर अपने वाहन की दिशा को परिवर्तित कर लेते हैं। ठीक इसी प्रकार यदि किसी कुसंग में फंसकर पिता ने अपनी जीवन यात्रा को कुमार्ग के गड्ढों में फंसा दिया तो उनकी इस विपरीत स्थिति से भी शिक्षा लेते हुए स्वयं का बचाव करना और अपने जीवन को सुमार्ग पर चलाना ही उचित है। वैसे भी ऐसी स्थिति में पिता के नशेड़ी या कुमार्गी होने पर परिवार पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव से हमें यही शिक्षा मिलती है कि इस स्थिति में हमें पिता के कुमार्ग पथ का अनुकरण नहीं करना है।

अब प्रश्न उइता है कि इस स्थिति में वेद भगवान के आदेश vuozr% firq% iq=k अर्थात् पिता के अनुव्रती होने का क्या होगा। इसके लिए हमें 'अनुव्रती' होने को क्या होगा। इसके यौगिक अर्थ को जानना होगा। यजुर्वेद में व्रत की व्याख्या करते हुए कहा vXus ozrirs ozra pfj";kfe rPNds;a rUes jk/;rke~A bnegeuLkRlR;eqiSfeAA यजु 1/5 अर्थात् "हे सत्यप्रकाश स्वरूप परमात्मन् आप व्रतों के पालक एवं रक्षक हैं। मैं असत्य को छोड़कर सत्य ग्रहण करने का व्रत लेता हूं मुझे इस व्रत को पूर्ण करने की शक्ति प्रदान करें।" इस वेद मंत्र में दी गई व्रत की परिभाषा शुभ संकल्प से स्पष्ट हो जाता है कि अनुव्रतः होने का सीधा अभिप्राय यही है कि हमें अपने जीवन में पुत्र धर्म का निर्वहन करने के लिए पिता के व्रतों अर्थात शुभसंकल्पों अर्थात् असत्य त्याग कर सत्य मार्ग पर चलने का ही अनुसरण करना है। यक्ष युधिष्ठिर संवाद में युधिष्ठिर ने पिता को आकाश से भी ऊंचा बता कर पिता के महत्व को स्थापित किया है और अपने जीवन में अपने पुत्र से पराजित होने की प्रसन्नता की भव्य एवं दिव्य भावना का वर्णन पिता के लिए किया है। इससे स्पष्ट है कि यदि पिता कुमार्गी, अधार्मिक है तो वह अपने पिता होने का दायित्व नहीं निभा रहा ऐसी स्थिति में पिता के उस कुमार्ग का अनुसरण करना पुत्र के लिए आवश्यक नहीं है। माता पिता के लिए पृथ्वी भर की समस्त संपदाओं से भी अधिक मूल्यवान पुत्र सम्पदा है। और पुत्र को ßiqukfr =;rs pþ अर्थात कुल को पवित्र करने वाला और माता—पिता की रक्षा करने वाला कहा गया।

इस बात को एक अन्य प्रकार से समझने का प्रयास करते हैं। हमारे पिता फिर पिता के पिता, दादा और दादा के पिता, परदादा ऐसे यह लम्बी कड़ी सृष्टि के उत्पतिकर्ता परमपिता परमेश्वर तक जाती है। अब इस लंबी अंतहीन सी कड़ी में बीच में किसी ने यदि अपने सच्चे पुत्र धर्म का निर्वहन नहीं किया तो यह कड़ी में बीच में किसी ने यदि अपने सचचे पुत्र धर्म का निर्वहन नहीं किया तो यह कड़ी टूट जाती है। अब इस टूटी कड़ी को जोड़ने और अपनी वंश परम्परा को परमपिता तक पहुचाने के लिए हमें परमपिता परमेश्वर का सच्चा अनुव्रती होना पडेगा। इससे लम्बी वंश परम्परा में यदि कहीं अपभ्रंश दोष आ गया है तो हम परमिता परमेश्वर तथा उन द्वारा प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान वेद के अनुगामी होकर उस आ गए दोष को दूर कर सकते हैं। हमें इस बात की प्रेरणा मिलती है जैसे यज्ञ की अग्नि में अरहूत होकर समिधा अपने अन्दर छिपी अग्नि को अग्निदेव के साथ एकरूप करते हुए अग्निस्वरूप हो जाता है ठीक उसी प्रकार इस मनुष्य जीवन में हम भी अनुव्रती होने का सच्चा अभिप्राय समझ कर अपनी आत्मा को अग्नि सवरूप परमात्मा को समर्पित कर उनके गुणों से एकरूपता स्थापित करते हुए उन गुणों को अपने जीवन में धारण करने का शुभ संकल्प करते हुए उन गुणों को अपने जीवन में धारण करने का शुभ संकल्प लेते हुए पिता के अनुव्रती होने के धर्म का निर्वहन कर सकते हैं। लौकिक जीवन में पिता के सभी शुभकंकल्पों संस्कारों को अपनी बुद्धि विवेक की छलनी में से छाानकर उन्हें अपने जीवन में धारण करना ही पिता का अनुव्रती होना कहलाता है।

जिस कुल में स्त्री – पुरूष परस्पर एक – दूसरे से खुश रहते हैं उसका अवश्य कल्याण होता है। अज्ञात

जाट कौन है

राकेश सरोहा

जाट भारत की प्रमुख जातियों में से एक अति महत्वपूर्ण जाति है यह भारत के उत्तर तथा पश्चिम भ्सू–भाग पर निवास करती है। इस जाति का इतिहास बहुत प्राचीन है तथा यह शुद्ध भारतवशींय जाति हैं जाट जाति की उत्पति व उदगम स्थल के बारे में विभिन्न विद्वानों की बेशक अलग–अलग मत है इस जाति की उत्पति के सम्बन्ध में विद्वानों की बेशक अलग–अलग धारणाएं हैं परन्तु इस जाति के गुणों व वरता के सम्बन्ध में सभी का एकमत है कि जाट सदैव से ही वीर, पराक्रमी तथा अत्याचार के विरूद्ध युद्ध करने वाले रहे हैं जन्म भूमि व देश के लिए मर मिटने की भावना इनके क्षून में रसी वसी रही है तथा जाट दोस्तों के दोस्त व दुश्मनों के लिए मौत बनकर रहते आये हैं। प्राचीन समय में जब ऋषि मुनी लोगों के कल्याण हेतु साधना किया करते थे तो उस समय असुर जाति के लोग इनकी ध्यान साधना को भंग कर देते थे तथा साधु सन्तों का अपमान कर देते थे इन असुरों के अत्याचारों से तंग आकर साधु सन्तों ने एक सभा का आयोजन करके ऐसे व्यक्ति की तलाश शुरू की जो इन असुरों के अत्याचारों का मुकाबला करके इन्हें परास्त कर सके। उस समय साधु सन्तों की धरती पर कृषक वर्ग का एक समूह ऐसा मिला जो अत्याधिक मेहनती, बलशाली व साहसी था इस समूह को साधु सन्तों ने धर्म की रक्ष करने के लिए असुरों से युद्ध करने के लिए प्रेरित किया व उन्हें अस्त्र शस्त्र चलाना व युद्ध विधा में निपुण किया तथा उस वीर व साहसी समूह को जाट के नाम से समबोधित किया। उस समय धर्म की रक्षा हेतु जाट वीरों ने असुरों का नाश करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी तभी से कृषक वर्ग का वह साहसी व वीर समूह जाट कहलाने लगा तथा सदैव अत्याचारी से युद्ध करने में अग्रणी भूमिका निभाता रहा। इस प्रकार जाट जाति (समूह) सामने आयी तथा आज भी जाट जाति की पहचान एक परिश्रमी कृषक व वीर सैनिकों के रूप में है। इसके अतिरिक्त जाट जाति में बहुत सी विशेषताएं और गुण है जिनका अध्ययन करने से पता चलता है कि जाअ कौन है। जाट कौन और क्यों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

1. बिना किसी डर और संकोच के सच्ची बात कहने वाला, सच का साथ देने वसला और सच के लिए मर मिटने वाला प्रत्येक व्यक्ति जाट है। 2. मेहनत करके जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति जाट है। 3. देश की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान देने वाला व्यक्ति जाट है। 4. देश प्रेम को अधिमान देने वाला हर व्यक्ति जाट है। 5. लोकतन्त्र में विश्वास रखने वाला व्यक्ति जाट है। 6. आडम्बरों व धार्मिक पाखण्डों से दूर रहने वाला व्यक्ति जाट है। 7. दिखावे और प्रदर्शन से दूर रहने वाला जाट है। 8. अत्याचार व गुलामी का विरोध करने वाला जाट है। 9. समगौत्र विवाह का विरोध करने वाला जाट है। 10. बुजुर्गों को मान सम्मान व चौधर देने वाला जाट है। 11. सन्तोषी जीवन जीने वाला व्यक्ति जाट है। 12. बहु बेटियों का अपमान ना सहने वाला तथा नारीयों का सम्मान करने वाला व्यक्ति भी जाट है। 13. दूसरों का झगड़ा सुलझाने के लिए अपना नुकसान करने वाला भी जाट है। 14. गलत बात के लिए अड़ने वाला भी जाट है। 15. अपने परिवार, समाज व देश के लिए अपने जीवन का बलिदान देने वाला भी जाट है। 16. गलत बात व अत्याचार के विरूद्ध अपने भाई का विरोद्ध करने वाला व्यक्ति भी जाट है। 17. चालाकी और धूर्तता से दूर रहने वाला व्यक्ति भी जाट है। 18. सभी जातियों व धर्मों का सम्मान करने वाला व्यक्ति भी जाट तुल्य है। 19. जिसकी करनी और कथनी में अन्तर नहो वह व्यक्ति भी जाट है। 20. कृषि का कार्य व देश की रक्ष करने वाला व्यक्ति भी जाट है। 21. सच्ची बात करने वाला और चापलुसी से दूर रहने वाला व्यक्ति भी जाट समान है। 22. दृढ़ निश्चिय, इच्छा शक्ति से भरपमर व अपनी ध ुन का पक्का जाट है। 23. जिसका चरित्र आदर्शवादी हो वह जाट है। 24. ईमानदारी से जीवन जीने वाला व्यक्ति जाट है। 25. पंचायत के निर्णय को परमेश्वर का आदेश मानने वाला व्यक्ति भी जाट है। 26. सभी का समान भाव से आदर करने वाला व्यक्ति भी जाट है। 29. जीवन में सत्य के मार्ग पर चलते हुए कभी न हार ना मानने वाला व्यक्ति भी जाट है। 30. नारी को समान सम्मान व नारी को सिर पर बिठाने वाला व्यक्ति भी जाट है। 31. बच्चों को चरित्रक दृष्टि से मजबूत बनाने वाला व उन्हें संसेरी व वीरता का पाठ पढ़ाने वाला व्यक्ति भी जाट है। 32. प्रकृति व पशंओं से प्रेम करने वाला व्यक्ति भी जाट है। 33. दूध दहीं व घी खाकर मेहनत करने वाला व्यक्ति भी जाट है। 34. स्वाभिमान के लिए मर मिटने वाला जाट है। 35. देश के विकास के लिए मेहनत करने वाला भी जाट है। 36. अपनी गलती को स्वीकार करने वाला व अपनी गलती को सुधारने वाला भी जाट है। 37. मेहनत करके सारे देश के लिए अन्न उत्पादन करने वाला भी जाट है। 38. महापुरूषों व वीरों का सम्मान करने वाला भी जाट तुल्य है। 39. व्यक्तिगत हित के स्थान पर देश हित को अधिमान देने वाला व्यक्ति भी जाट है। 40. पहलवानी तथा कब्बड़ी जैसे खेलों को जीवन में अपनाने वाला व्यक्ति भी जाट है। 41. अत्याचारी का अत्याचार दूर करने वाला जाट है। 42. मेहमान का दिल से सम्मान करने वाला भी जाट है। 43. सामाजिक कुरीतियों का विरोध ा व त्याग करने वाला भी जाट है। 44. अपने हक के लिए आवाज के बुलन्द करने वाला व संघर्ष करने वाला जाट है। 45. सांस्कृतिक रिती का पालन करने भी जाट है। 46. साफ कहना सुखी रहना की नीति पर चलने वाला भी जाट है। 47. गरीब व कमजोर की मुसिबत में मद्द करने वाला भी जाट है। 48. अपनी जन्म भूमि, मातृभूमि व कृषि भूमि की रक्षा करने वाला भी जाट है। 49. चोरी, हेराफेरी व अनैतिक आचरण से दूर रहने वाला भी जाट है। 50. जीवन में मेहनत, ईमानदारी व अनुशासन का दृढ़ता से पालन करने वाला तथा किसी भी हद तक संर्घष करने वाला व्यक्ति सच्चा जाट व क्षेत्रीय है।

इस प्रकार से जाट वह व्यक्ति है जो उपरोक्त कार्यों का निर्वाह अपने जीवन में करता है। जाटों के बारे में देश विदेश के

लेखकों व विद्वानों की क्या राय है यह जानना भी आवश्यक है। जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है :–

जाट जाति के बारे में विभिन्न विद्वानों का मत

1. '' जिसके दिल में मानव जाति के प्रति प्रेम है, जिसके दिल में कोई छोटा बड़ा, छुत अछुत तथा धर्मी अधर्मी नहीं है जिसकी नजरों में सभी मानव एक समान है वह जाट है''– भले राम बेनिवाल, जाट इतिहासकार 2. ''जाट एक अत्यंत मजबूत जाति है। देखने में वे दैत्य जैसे चीटियों और टिड्डियों की तरह संख्यां वाले और शत्रुओं के लिए सच्ची महामारी है'' तैमूर लगं 3. ''भारत की स्वतंन्त्रता के प्रतयेक संघर्ष में जाटों ने भाग लिया 1857 के संघर्ष में जाटों की संख्या विशाल थी जिनमें असंख्य फांसी पर चढ़े तथा गांवों में पैडो पर फांसी लटकाये जाने वालों में असंख्या जाट ही थे" – गोपाल प्रसाद कौशिक, लेखक 4. "जाट और कांच टूट सकते है लेकिन झुकते कभी नहीं" – शहीद भगत सिंह की माता 5. "जाट सच्चे देशभक्त व साहसी है। – डा0 विटरसेल 6. "जाटों की कार्य क्षमता, देश भक्ति, सैनिक निपुणता तथा बहादुरी सदैव अद्वितीय रही" – फील्ड मार्शल के.एस. करियापा 7. "जाट भारतीय राष्ट्र की रीढ़ है भारत माता को इस साहसी वीर जाति से बढ़ी आशाएं है" – पंडित मदन मोहन मालवीय 8. "भारत वर्ष में जाटों से बढ़कर कोई दूसरा अधिक शक्तिशाली तथा श्रेष्ट किसान नही है वे अपनी भूमि के प्रति समर्पित है। वे इस सम्बन्ध ा में किसी प्रकार की दखलन्दाजी सहन नहीं कर सकते" – पं0 जवाहर लाल नेहरू 9. "प्रत्येक जाट व्यक्तिगत रूप से मनमौजी और स्वाभिमानी होता है। मनमानी करना आन की खातिर अपना घर बिगडना इसके लिए हंसी खेल है। जाट स्वभाव में वचन पालन दृढ़ता, पराक्रम में अटलता और प्रतिशोध में प्रबलता है" – डा. रणजीत सिंह 10. "जाटों में चालाकी और धूर्तता योग्यता की अपेक्षा बहुत ही कम होती है। वे स्वामी भक्त और साहसी होते हैं" – डा. विटरसेल 11. "जाट–जाट को मारता यह ही भारी खोट, ये सारे मिल जाये तो अजेय इनका कोट" – शिव कुमार प्रेमी 12. "जाट बड़े परिश्रमी एवं सफल कृषक है, वे खेती करने और शस्त्र चलाने में एकदम निपुण है। भारत की ग्रामीण आबादी में जाट सबसे श्रेष्ठ नागरिक है" – जे.डी कनिघमं 13. "जाट वास्तव में एक नस्ल है" – जोन सेमूर 14. "जाट शब्द की व्याख्या करने की आवश्यता नहीं है। यह ऋग्वेद, पुराण और मनुस्मृति आदि अत्यन्त प्राचीन ग्रंन्थों में स्वतः सिद्ध है। इसकी परिभाषा की भी आवश्यता नहीं है। यह तो वह वृक्ष है जिससे समय–समय पर जातियों की उत्पति हुई" – ए.एच. बिंगले 15. "जाट शब्द की परिभाषा है ज+अ+ट त्र जाट अर्थात ज त्र जवान, अ त्र अत्याचार, ट त्र टकराव इसका अर्थ है जो (जवान) अत्याचारी से टकराये" – लेखक राकेश सरोहा

इस प्रकार देसी–विदेसी विभिन्न लेखकों व विद्धवानों ने जाट जाति की विशेषताओं व कार्यों को अलग–अलग प्रकार से परिभाषित किया है। असल में जाट एक जाति या नस्ल ना होकर एक धर्म के गुणों को अपनाकर अपने जीवन में सच्चाई, ईमानदारी, देशभक्ति, साहस व चरित्रक गुणों को प्रमुखता देकर जीवन के कार्य करता है। वह जाट कहलाने के योग्य है। शायद यहीं कारण है कि जाट धर्म का पालन करने वाले विभिन्न जाट गोत्रों के व्यक्ति अन्य जातियों में भी पाये जाते हैं। आज जाट जाति में जन्म लेने मात्र से जाट कहलाने को आवश्यकता नहीं है बल्कि कर्म से जाट बनने की आवश्यकता है।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl 26/5'3" MCA, MBA, Employed as supervisor in Central Govt. on contract basis. Avoid Gotras: Bagri, Nehra, Nain, Cont.: 09417415367
- SM4 Jat Girl 23/5'2" B.Tech (CSE), Avoid Gotra: Malik, Hooda, Joon, Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Girl 25/5'3" B.Tech in Chemical Engineer from P.U. Chandigarh. Employed in Reliance Petrochemical Company in Vadodra (Gujrat) with Rs. 7 lac package P.A, Avoid Gotras: Lohchab, Bajard, Dhankar, Cont.: 08146991568, 09803450267
- SM4 Jat Girl 28/5'4" B. Com. (Hons.) C.C.W.A. JIB, CIB Preferred from Chandigarh, Panchkula, Mohali, Avoid Gotras: Dahiya, Nandal, Doon, Cont.: 09501421574
- SM4 Jat Manglik Girl 26/5'1" M.A. (History) B.Ed., Mother in Govt. service. Avoid Gotras: Thakran, Sehrawat, Dahiya, Cont.: 09996480088,
- SM4 Jat Girl 24/5'6" B.Sc.(Hons.) Math with Computer, M.Sc. (Math) from P. U. Chandigarh, B.Ed. STAT & HTAT cleared, Avoid Gotras: Rathee, Maan, Dhanda, Cont.: 09815253211
- SM4 Jat Girl 25/5'6" M.Sc.(Microbiology), B. Ed. Avoid Gotras: Lather, Malik, Kundu, Cont.: 09780938830
- SM4 Jat Girl 26/5'5" BDS/MHA Working at Max Hospital Saket, Delhi. Mother Headmistress. Father Associate Professor. Avoid Gotras: Dhillon, Boora, Dullet, Cont.: 09813088088
- SM4 Jat Girl DOB (28.12.1988)26/5'3" M.A. (English) from MDU Rohtak. B.Ed. CTET (TGT) passed. Preparing for UGC-NET. Avoid Gotras: Dalal, Hooda, Jatrana, Cont.: 09991599458, 09355869391, 09015381524
- SM4 Jat Boy 28/6' B. Tech Working in I.T Park Chandigarh with Rs. 7 Lac package. P.A. Avoid Gotras: Dhaliwal, Lather, Basati, Cont.: 09464774801
- SM4 Jat Boy 29/5'10" MSc (Math), B.E.d. Own Business, own showroom in Baltana (Pb.) Preferred service girl. Avoid Gotras: Khatkar, Mor, Punia, Cont.: 09878983344
- SM4 Jat Boy 28/5'10" M. P.Ed.,Working as Inspector Store in HAFED at Bhiwani Preferred service girl. Avoid Gotras: Dalal, Sehrawat, Grewal, (not direct) Maan, Deswal, Sihag, Cont.: 09878983344
- SM4 Convent Educated Jat Boy 29/5'11" B.Sc, B.B.A & Pursuing Engineering (AMEI) Serving in Indian Navy. Avoid Gotras: Kadian, Malik, Tokas, Cont.: 08679157130, 9466203446
- SM4 Convent Educated Jat Girl 26/5'7.5" B. Tech (Electronics & Comm.) MBA (HR) Working in PSU Bank. Avoid Gotras: Kadian, Malik, Tokas, Cont.: 08679157130, 9466203446

Organises on the Spot Poster Making Competition on 24-11-2014

For School Going students

On the spot poster making competition will be organised by **JAT SABHA CHANDIGARH** for school going students on 24th November, 2014 at 10.00 a.m in the premises at **JAT BHAWAN, 2-B, SECTOR 27-A, MADHYA MARG, CHANDIGARH.**

The aim of this competition is to inculcate creative spirit among the children and polish the existing potential among them. To widen the scope of talent search in this field and give incentives to the deserving children, it has been decided to classify all the students into three categories :-

Category A	Class III to V
Category B	Class VI to VIII
Category C	Class IX to XII

The topic of the poster making competition will be Pollution is Destructive (प्रदुषण विनाशकारी है।). The duration of the competition will be one hour only.

For each category there will be prizes of Rs. 400/-, 300/- and Rs. 200/- and two consolation prizes of Rs. 100/- each.

The entries for the competition may be sent to **JAT BHAWAN, 2-B, SECTOR 27-A, MADHYA MARG, CHANDIGARH-160019** by post or personally by 20 November, 2014 upto 5.00 p.m. The entry fee is Rs. 10/- per participant.

The terms and conditions of the Competition are as follows :-

1. The participants must bring their identity cards or the identity slips along with attested photograph issued by the Head of the institution for eligibility in the competition.
2. The participants should bring their own drawing material and cardbord. Only drawing sheets will be given by the competition organizers.
3. The judgement of the chairman of the competition will be final and binding on all.
4. The result will be announced on the same day. Each participant will be given the participant certificate and a small gift on 24 January, 2015 on the occasion of Basant Panchami & Deen Bandhu Sir Chhotu Ram birthday.

Further enquiries, may be made on telephone Nos. 0172-2654932, 2641127 or personally from the, Jat Sabha, **JAT BHAWAN, 2-B, SECTOR 27-A, MADHYA MARG, CHANDIGARH-160019.**

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़
जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. G/CHD/0107/2012-14 **RNI No. CHABIL/2000/3469**

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।